चिड़िया



लेव तोल्सतोय

चिड़िया



लेव तोलस्तोय

मूल्य	: 20.00
तृतीय संस्करण	: 2003
प्रकाशक	: साक्षरता केन्द्र 1170, छत्ता मदन गोपाल चाँदनी चौक, दिल्ली–110006
लेज़र कम्पोज़िंग	: अजय प्रिंटर्स नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032
मुद्रक	: आर. के. ऑफसेट शाहदरा, दिल्ली–110032

लड़की और खुमियां

दो लड़कियां जंगल से खुमियां बटोर कर घर लौट रही थीं।

उनके रास्ते में रेलवे लाइन आती थी।

उन्होंने सोचा कि गाड़ी अभी दूर है, इसलिये वे पुश्ते पर चढ़कर रेल की पटरी लांघने लगीं।

अचानक उन्हें इंजन का शोर सुनाई दिया। बड़ी लड़की वापस भाग गई, मगर छोटी रेलवे लाइन लांघ गई।

बड़ी लड़की ने चिल्लाकर अपनी बहन से कहा–"वापस मत आना !"

मगर इंजन नज़दीक आ गया था और इतना शोर मचा रहा था कि छोटी लड़की अपनी बड़ी बहन की बात साफ़ तौर पर न सुन पाई। उसने सोचा कि उसे वापस भाग आने को कहा गया है। वह पटरी को लांघती हुई वापस भाग चली, उसने ठोकर खाई और उसकी खुमियां बिखर गईं। वह खुमियां समेटने लगी।

इंजन नज़दीक आ चुका था ड्राइवर ने पूरे ज़ोर से सीटी बजाई।

बड़ी बहन चिल्लाई–"खुमियां पड़ी रहने दो !" मगर छोटी लड़की को लगा कि उसे खुमियां समेटने के लिये कहा गया है। वह पटरियों के बीच रेंगती हुई खुमियां समेटती रही।

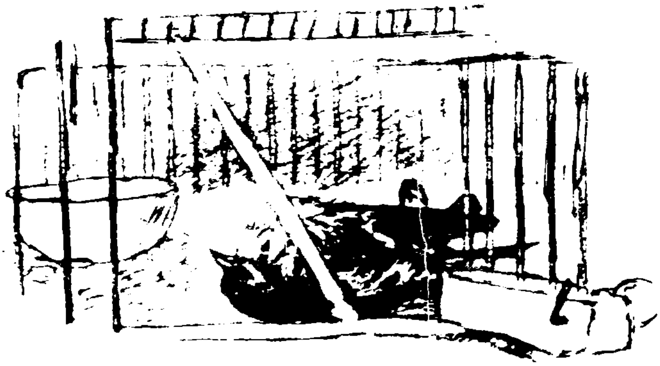
ड्राइवर के लिये गाड़ी रोकना सम्भव नहीं था। इंजन ने एक बार फिर पूरे ज़ोर से सीटी बजाई और गाड़ी लड़की के ऊपर से गुज़र गई।

बड़ी लड़की चीख़ उठी और बिलख-बिलख कर रो पड़ी। सभी मुसाफिर खिड़कियों में से झांक रहे थे और कंडक्टर यह देखने के लिये भागता हुआ गाड़ी के आख़िरी सिरे पर जा पहुंचा कि लड़की का क्या हुआ।

गाड़ी जब गुज़र गई तो सभी ने देखा कि लड़की सिर नीचे की ओर सटाये हुए, हिले-डुले बिना पटरियों के बीच लेटी हुई है।

बाद में जब गाड़ी बहुत दूर चली गयी तो लड़की ने सिर ऊपर उठाया, उठकर खड़ी हुई, उसने खुमियां जमा करीं और बहन के पास भाग गई।





चिड़िया

सेर्योजा को उसके जन्म-दिन पर बहुत-से उपहार मिले—खिलौने—भेड़िये, घोड़े और चित्र। मगर सेर्योजा को सब से अच्छा उपहार दिया चाचा ने—पक्षी फंसाने का जाल। जाल इस तरह से बना हुआ था—एक चौखटे के बीच में जाल के साथ एक छोटा-सा तख़्ता जुड़ा हुआ था। इस छोटे-से तख़्ते पर कुछ दाने रखकर उसे आंगन में रख दिया जाता था। जैसे ही कोई पक्षी तख़्ते पर बैठता, तख़्ता उलटता और जाल ऊपर से अपने आप बन्द हो जाता। सेर्योजा यह उपहार पाकर बेहद खुश हुआ और मां को दिखाने भागा।

"यह तो अच्छा खिलौना नहीं है। तुम्हें क्या करना है पक्षियों का ? उन्हें सता-तड़पाकर तुम्हें क्या मिलेगा ?"

"मैं उन्हें पिंजरे में रखूंगा। वे गायेंगे और चहचहायेंगें और मैं उन्हें दाना-दुनका खिलाऊंगा।"

सेर्योजा दाने लाया, उन्हें तख़्ते पर बिखराकर उसने जाल को बगीचे में रख दिया। वह इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि कब पक्षी उसके जाल में फंसते हैं। मगर पक्षी उससे डरते रहे और जाल के पास नहीं फटके। सेर्योजा जाल को वहीं छोड़कर खाना खाने चला गया। खाना खाकर जब वह लौटा तो जाल को बन्द पाया। उसके नीचे एक पक्षी फड़फड़ा रहा था। सेर्योजा बहुत खुश हुआ, पक्षी को पकड़कर घर ले गया।

"मां, देखो तो मैंने पक्षी पकड़ लिया। शायद यह बुलबुल है। देखो, इसका

दिल कैसे धड़क रहा है!"

मां ने कहा—"यह बुलबुल नहीं, कोई दूसरी चिड़िया है। देखो इसे तंग नहीं करना। बेहतर यह है कि तुम इसे छोड़ दो।"

"नहीं, मैं इसे अच्छी तरह खिलाऊंगा-पिलाऊंगा।"

सेर्योजा ने चिड़िया को पिंजरे में बन्द कर दिया। दो दिन तक उसने उसे अच्छी तरह दाना-पानी दिया और पिंजरा भी साफ किया। तीसरे दिन वह चिड़िया को भूल गया और उसने उसके पीने का पानी नहीं बदला। मां ने कहा—

"देखो, भूल गये न चिड़ियों को ! बेहतर यही है कि इसे उड़ा दो।"

"नहीं, मैं अब नहीं भूलूंगा। अभी पानी रख देता हूं और पिंजरा साफ करता हूं।"

सेर्योजा पिंजरे में हाथ डाल कर उसे साफ करने लगा और चिड़िया डरती हुई इधर-उधर पिजरे से पंख टकराने लगी। सेर्योजा पिंजरा साफ करके पानी लाने गया। मां ने देखा कि वह पिंजरे का दरवाज़ा बन्द करना भूल गया है। उसने पुकार कर कहा—

"सेर्योजा पिंजरे का दरवाज़ा बन्द कर दे, वरना तेरी चिड़िया कमरे की दीवारों से टकराकर मर जायेगी।"

मां इतना कह भी न पाई थी कि चिड़िया को दरवाज़ा मिल गया। वह बहुत खुश हुई, उसने अपने छोटे-छोटे पंख फैलाये और कमरे को लांघती हुई खिड़की की तरफ उड़ चली। हां, खिड़की के बन्द शीशे पर उसकी नज़र नहीं पड़ी। वह शीशे से ज़ोर से टकराई और खिड़की से नीचे गिर पड़ी।

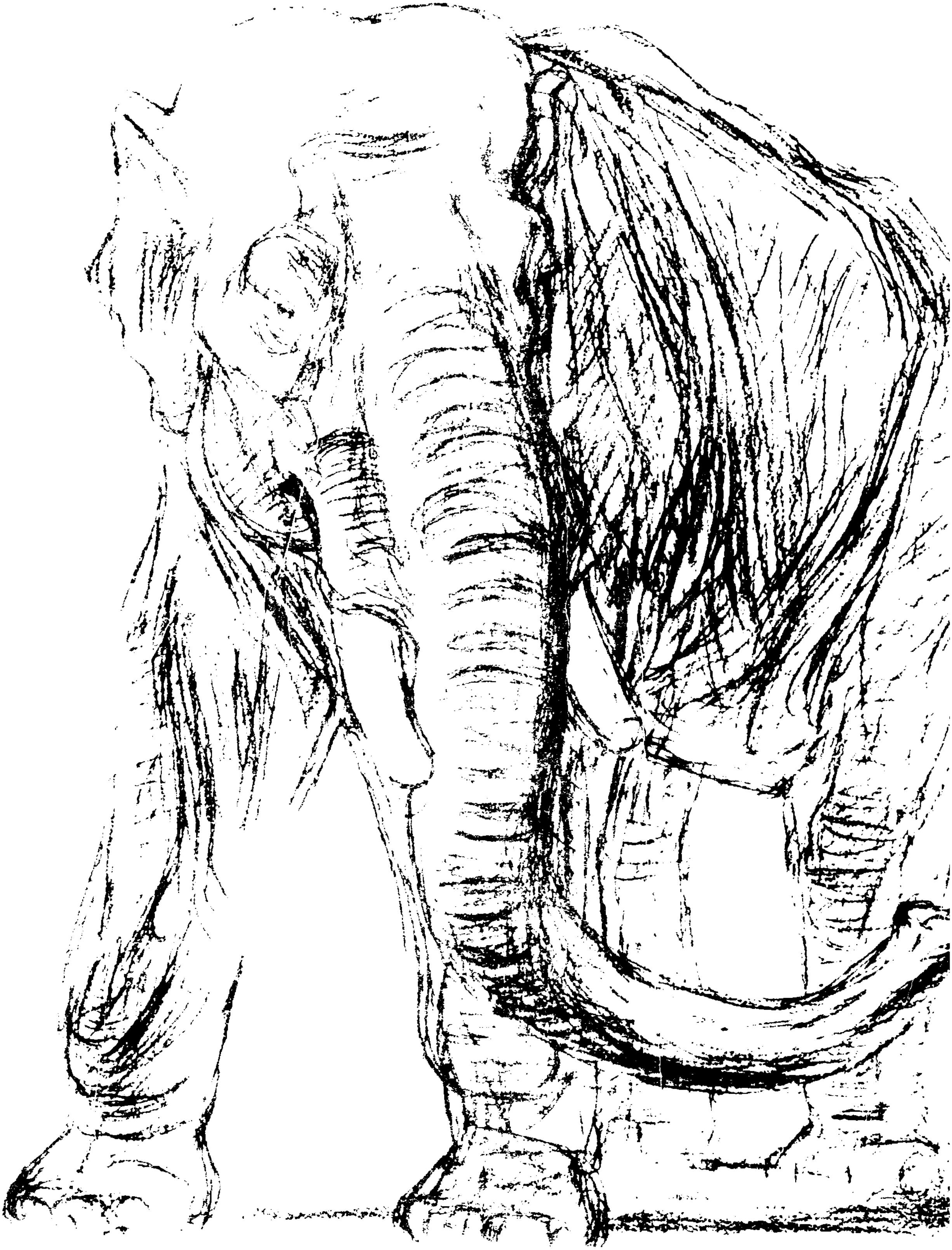
सेर्योजा भागकर गया, उसने चिड़िया को उठाया और फिर पिंजरे में लाकर डाल दिया। चिड़िया अभी ज़िन्दा थीं, मगर छाती के बल पड़ी थी। उसके पंख फैले हुए थे और वह मुश्किल से सांस ले रही थी। सेर्योजा उसे देखता रहा, देखता रहा और फिर रोने लगा।

"मां, अब मैं क्या करूं ?"

"अब तुम्हारे किये कुछ नहीं होगा।"

सेर्योजा दिन भर पिंजरे के पास बैठा रहा, चिड़िया को ही देखता रहा। चिड़िया उसी तरह छाती के बल पड़ी रही, गहरी और तेज़ सांसें लेती रही। सेर्योजा जब सोने के लिये बिस्तर पर जाकर लेटा तब तक चिड़िया ज़िन्दा थी। लड़के को बहुत देर तक नींद नहीं आई। जैसे ही वह आंख मूंदता वैसे ही छाती के बल पड़ी हुई गहरी सांसें लेनेवाली चिड़िया की तस्वीर उसकी आंखों के सामने घूम जाती। सुबह को जब सेर्योजा पिंजरे के पास गया तो उसने देखा कि चिड़िया पीठ के बल पड़ी है और छोटे-छोटे पंजे उसके अकड़े हुए जिस्म के साथ चिपके हुए हैं। इसके बाद सेर्योजा ने कभी परिन्दे नहीं पकड़े।





हाथी

किसी भारतीय के पास एक हाथी था। मालिक उसे खिलाता-पिलाता बहुत थोड़ा और काम लेता बहुत ज्यादा। हाथी को एक दिन गुस्सा आ गया और उसने मालिक को अपने पैर तले रौंद डाला। मालिक मर गया। उस भारतीय की पत्नी रोने लगी और उसने अपने बच्चों को हाथी के पैरों के पास गिराकर कहा—"हाथी तुमने इनके पिता की जान ली है अब इन्हें भी मार डालो।" हाथी ने बच्चों की ओर देखा, सबसे बड़े बालक को सूंड में लपेटा और बहुत धीरे से अपनी गर्दन पर बिठा दिया। हाथी इस लड़के का हुक्म मानने और उसके लिये काम करने लगा।





दो दोस्त

एक बार दो दोस्त जंगल में से जा रहे थे। अचानक एक भालू उनकी ओर झपटा। उनमें से एक भाग खड़ा हुआ, वृक्ष पर चढ़कर छिप गया, मगर दूसरा वहीं पर खड़ा रह गया। वह करता भी तो क्या ? मुर्दा बनकर ज़मीन पर लेट गया।

भालू उसके पास आकर उसे सूंघने लगा। उस व्यक्ति ने अपनी सांस रोक ली।

भालू ने उसका मुंह सूंघा और उसे मुर्दा समझकर वहां से हट गया।

भालू जब चला गया तो उसका मित्र हंसता हुआ वृक्ष से नीचे उतरा। उसने पूछा–

"क्यों भाई, भालू ने क्या कहा तुम्हारे कान में ?"

"उसने कहा कि वे लोग बहुत बुरे होते हैं जो ख़तरे के वक्त अपने दोस्त को अकेला छोड़कर भाग जाते हैं।"



झूठा लड़का

कभी एक लड़का भेड़ें चराया करता था। एक दिन उसने यह ढोंग किया मानो उसे भेड़िया दिखाई दिया है और लगा चिल्लाने–"मदद करो, मदद करो, भेड़िया आया ! भेड़िया आया !" किसान उसकी मदद को भागे आये मगर पाया कि वह झूठमूठ चिल्ला रहा था। लड़के ने दो-तीन बार इसी तरह किया। एक बार हुआ यह कि सचमुच भेड़िया आ गया। लड़का लगा चिल्लाने–"जल्दी आओ, जल्दी आओ, भेड़िया आया !" किसानों ने सोचा कि वह पहले की भांति आज भी उन्हें धोखा दे रहा है। उन्होंने लड़के की चीख़-पुकार पर कान नहीं दिया। भेड़िये ने मैदान साफ पाया और एक-एक करके सभी भेड़ों को चीर डाला।





बिल्ली का बच्चा

कभी वास्या और कात्या नाम के भाई-बहन कहीं रहते थे। उनके पास एक बिल्ली थी। वसन्त के दिनों में उनकी बिल्ली अचानक ही कहीं ग़ायब हो गयी। बच्चों ने उसे हर जगह ढूंढ़ा, मगर वह नहीं मिली। एक दिन वे खत्ती के नज़दीक खेल रहे थे। उन्होंने ऊपर से आती हुई म्याऊ-म्याऊं की बारीक-सी आवाज़ सुनी। वास्या खत्ती की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचा। कात्या नीचे खड़ी हुई पूछती रही–"मिल गयी बिल्ली? मिल गयी?" वास्या ने कोई जवाब नहीं दिया। आख़िर उसने चिल्लाकर कहा–"मिल गयी! मिल गयी हमारी बिल्ली... उसने बच्चे दिये हैं। ओह, कैसे प्यारे हैं! जल्दी से भागकर यहा आओ!"

कात्या भागकर घर गयी और बिल्ली के लिये दूध ले आयी।

बिल्ली ने पांच बच्चे दिये थे। जब वे ज़रा बड़े हो गये और उस कोने से थोड़ा बाहर आने लगे जहा वे पैदा हुए थे, तो वास्या और कात्या ने अपना मनपसन्द बच्चा चुन लिया। वह भूरे रंग का था और उसके पंजे सफ़ेद थे। वे उसे घर ले गये। मां ने बिल्ली के बाक़ी बच्चे लोगों को दे दिये और इसे बच्चों के पास रहने दिया। वास्या और कात्या उसे खिलाते-पिलाते, उसके साथ खेलते और उसे अपने साथ सुलाते।

एक दिन वास्या और कात्या सड़क पर खेलने गये और बिल्ली के बच्चे को भी अपने साथ ले गये।

सड़क पर पड़ी हुई सूखी घास हवा में हिल-डुल रही थी। बिल्ली का बच्चा

घास के साथ खेलने लगा और बच्चे उसे देख देखकर खुश होने लगे। फिर उन्हें खट्टे पत्ते दिखाई पड़ गये। वे पत्ते बटोरने लगे और बिल्ली के बच्चे के बारे में बिल्कुल भूल गये।

अचानक उन्होंने किसी को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते सुना—"वापस आओ, वापस आओ !" वास्या और कात्या ने उधर देखा तो पाया कि एक शिकारी तेज़ी से घोड़ा कुदाता आ रहा है और उसके आगे-आगे दो कुत्ते हैं। कुत्तों ने बिल्ली के बच्चे को देख लिया था और वे उसे दबोच लेना चाहते थे। भोला-भाला बिल्ली का बच्चा भागने के बजाय अपनी पीठ झुकाकर बैठ गया और कुत्तों की ओर देखने लगा। कात्या कुत्तों को देखकर बेहद डर गई; चीख़ी और दूर भाग गई। मगर वास्या जान छोड़कर बिल्ली के बच्चे की तरफ़ भागा और कुत्तों के साथ-साथ ही उसके पास पहुंचा। कुत्तों ने बिल्ली के बच्चे को दबोचना चाहा, मगर वास्या पेट के बल उसके ऊपर गिर गया और उसने उसे ढक दिया।

तभी शिकारी अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां आ पहुंचा और उसने कुत्तों को खदेड़ दिया। वास्या बिल्ली के बच्चे को घर ले आया और फिर कभी वह उसे अपने साथ मैदान में बाहर नहीं ले गया।



